आँचर के टुकड़ा

रमाकान्त मुकुल

आँचर के टुकड़ा

रमाकान्त मुकुल

आँचर के टुकड़ा

(भोजपुरी कविता संग्रह)

रमाकान्त मुकुल

भोजपुरी संस्थान
मार्ग–3, इन्द्रपुरी, पटना–800024

भोजपुरी संस्थान ग्रंथमाला के उन्नासीवाँ फूल

ग्रंथमाला-सम्पादक : पाण्डेय कपिल

आँचर के टुकड़ा

(भोजपुरी कविता संग्रह)

कवि : रमाकान्त मुकुल

प्रकाशक : भोजपुरी संस्थान, मार्ग-3, इन्द्रपुरी
पटना-800024

प्राप्ति-माध्यम : रमाकान्त मुकुल
पूर्वी दहियाँवा, जगदम्बा रोड़
छपरा (बिहार)-841301

सर्वाधिकार : रमाकान्त मुकुल

संस्करण : पहिला, 2003 ई०

आवरण : सुरेश पाण्डेय, आर्य समाज पथ
एम० पी० बाग, भोजपुर

अक्षर संयोजक : हरि ओम कुमार

मुद्रक : बालाजी स्क्रीन प्रिन्टर्स, छपरा

मूल्य : इक्यावन रुपया

AANCHAR KE TUKARA

Collection of Poems written
in Bhojpuri
by
Ramakant Mukul

Price Rs. 51/-

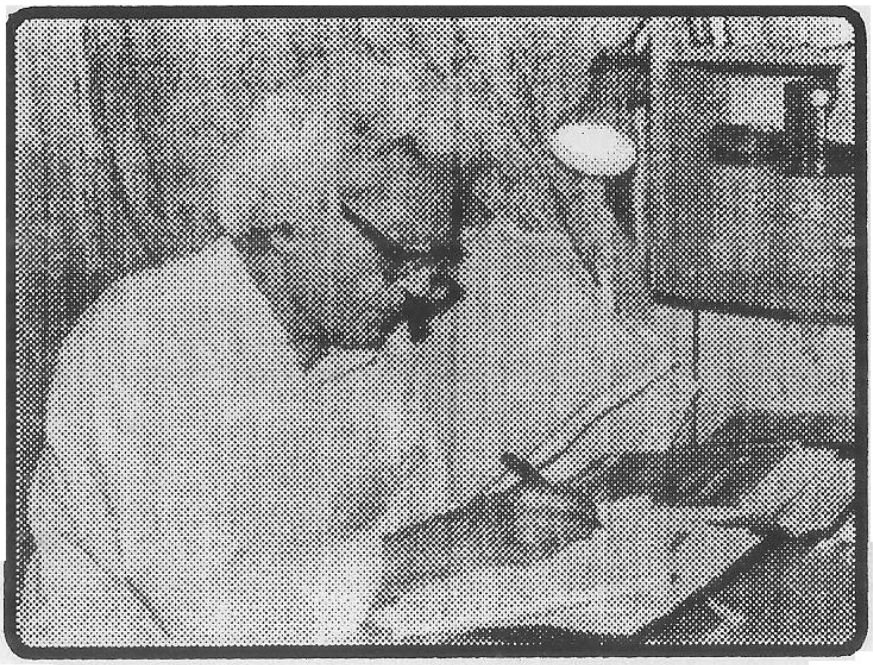

साहित्यस्रष्टा स्व० पं० प्रफुल्लचन्द्र ओझा 'मुक्त'

के

पावन स्मृति में

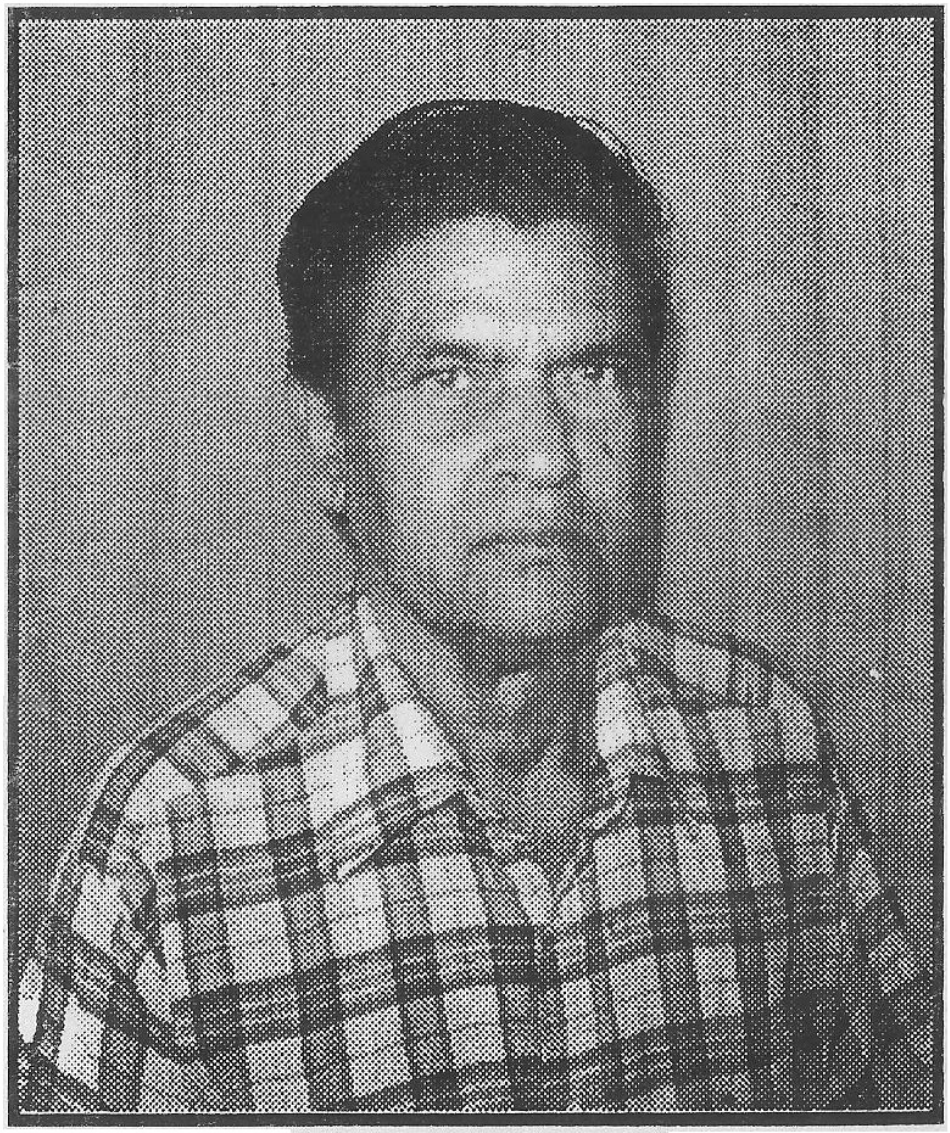

कवि : रमाकान्त मुकुल

रमाकान्त मुकुल

जन्म	:	12 जून 1939 पूर्वी दहियांवा,छपरा(बिहार)
पिता	:	स्व० आचार्य पं० दामोदर पाठक शास्त्री व्याकरणाचार्य,आयुर्वेदाचार्य
शिक्षा	:	इन्टरमीडिएट,साहित्यरत्न
प्रकाशित पुस्तक	:	अश्रुहार,संवेदना(हिन्दी काव्य-संग्रह)
अन्य प्रकाशन	:	डेग पर डेग(भोजपुरी काव्य संग्रह)के सह कवि, साप्ताहिक धर्मयुग,साप्ताहिक सुपथ (कायमगंज), रूपाम्बरा(कलकत्ता),रेखा (नागपुर),भारत टाइम्स, नवराष्ट्र, आर्यावर्त्त, भोजपुरी कहानियाँ (वाराणसी), कविता(भोजपुरी कविता,पटना),भोजपुरिया संसार (नई दिल्ली)आदि पत्र-पत्रिकन में रचना प्रकाशित
सम्प्रति	:	सरकारी सेवा से अवकाश प्राप्त
साहित्य सेवा	:	संविदा (चिरायतावादी हिन्दी काव्य संग्रह) सरस्वती संदेश(साप्ताहिक पत्र)छपरा,कमाल (मासिक पत्र) छपरा,पुष्पा(मासिक पत्र) सीवान,समिधा (हिन्दी -काव्य संग्रह) छपरा के सह-सम्पादक
संस्था से सम्बद्ध	:	चर्चना (साहित्य,संस्कृति,शिक्षा-पीठ)छपरा, वातायन (साहित्य-संस्कृति-शिक्षा,संस्थान)छपरा, ऋतज, अखिल भारतीय साहित्य परिषद्,अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन आदि संस्थन से सम्बद्ध
शीघ्र प्रकाश्य	:	वह लौट आयी(हिन्दी कहानी संग्रह)

आमुख

श्री रमाकान्त मुकुल के भोजपुरी कविता-संग्रह 'आँचर के टुकड़ा' पर कुछ लिखत खानी सुख आ सन्तोष के अनुभूति हो रहल बा। भोजपुरी में उनकर ई पहिल कृति ह जे पुस्तकाकार प्रकाशित हो रहल बा। बाकिर उनका काव्य-यात्रा के ई तिसरका डेग ह । एकरा पहिले, उनकर दूगो हिन्दी कविता-संग्रह प्रकाशित हो चुकल बा -'अश्रुहार ' 1954 में ,आ 'संवेदना '2002 में ।ई दूनू हिन्दी कविता -संग्रह पढ़ला का बाद,प्रस्तुत भोजपुरी कविता-संग्रह 'आँचर के टुकड़ा' के अध्ययन से मुकुल के काव्य-यात्रा आ उनका रचना-कर्म के क्रमिक विकास के रेखांकित कइल जा सकत बा।

प्रेम आ विरह के संचित आ संयमित अनुभूति जब भावुक आ संवेदनशील कवि-हृदय में पाक के पकठा जाला,परिपक्व हो जाला,त ओकरा चिन्तन में उदात्तता के विकास आ दृष्टि में व्यापकता के आकाश सहजे सुलभ हो जाला ।'आँचर के टुकड़ा' के कवितन में ओही उदात्तता आ व्यापकता के दर्शन होता ।

मुकुल जी हिन्दी कविता के संस्कार आत्मसात कइला का बाद भोजपुरी में उतरल बाड़े । स्वभावतः ऊ ग्राम्यता आ लोकाश्रयिता से मुक्त बाड़े आ उनका पृष्टभूमि, चिन्तन-मनन आ सोच -समझदारी में, अभिव्यक्ति आ प्रस्तुति में,कथ्य आ शिल्प-शैली में बौद्धिक उत्कर्ष रह -रह के झलकत बा। जीवन आ प्रकृति के उदात्त अंकन का अलावें, आपन पुरातन सांस्कृतिक विरासत महाभारत आ रामायण के विविध मार्मिक प्रसंग उनका सोच के रह-रह के उद्बुद्ध करत रहल बा। उनकरधरातल आम भोजपुरी कवियन से भिन्न बा,आ उनकर रचनात्मक अवदान भोजपुरी कविता के स्तर ऊँच उठावे में मददगार साबित होई,अइसन उमेद कइल जा सकेला।

भोजपुरी संस्थान ग्रंथमाला के एह उन्नासीवाँ ग्रंथ-पुष्प के भोजपुरी जगत में स्वागत होई, एकर विश्वास बा ।

मार्ग-3,इन्द्रपुरी
पटना - 800024

पाण्डेय कपिल
सम्पादक : भोजपुरी संस्थान ग्रंथमाला

आँचर के टुकड़ा पर एगो नजर

आँचर के टुकड़ा हिन्दी आ भोजपुरी के लेखक रमाकान्त मुकुल के भोजपुरी काव्य संग्रह ह। मुकुल जी के शुरुआती दौर के रचना हिन्दी में भइल आ ओह सिलसिला में उनकर दूगो काव्य संग्रह - अश्रुहार (1954) आउर संवेदना (2002) देखल जा सकेला। ई बात अलग बा कि मुकुल जी के काव्य यात्रा लमहर भइला के बावजूद अभी ले मात्र तीन गो संग्रह प्रकाशित बा। 'आँचर के टुकड़ा' उनकर पहिला भोजपुरी काव्य संग्रह ह,बाकिर एकरा से गुजरला पर पाठक लोगन के ई ना लागी की मुकुल जी भोजपुरी के नया लेखक बानी। काहे से कि इनका भोजपुरी कविता में एक प्रकार के नयापन बा आउर ओह में भरपूर काव्य चेतना बा।

रमाकान्त मुकुल के काव्य संवेदना उच्च कोटि के बा,जवना में जिनगी के आशा - निराशा, सुख -दुख,आस्था आ उत्साह सब कुछ बा। सांच पूछी त मुकुल जी के जन-जीवन आ समाज से सरोकार रहला के कारण कवितन के भाव - बोध में भी गहराई आ सकल बा।अधिकांश कविता जीवन के कवनो ना कवनो साँच पर आधारित बा एहिसे कहल जा सकेला मुकुल जी भोजपुरी माटी आ जीवन के जीवंत कवि बानी। गौर करे के बात ई बा कि मुकुल जी कवनो विषय पर आपन कलम साधिकार चला सकेले ।उनका 46 कवितन के एह संग्रह में अनेक अइसन कविताबा जेकरा में कवि के सहज जीवनानुभूति के सरस भाव व्यंजित भइल बा । कहे के जरूरत नइखे कि मुकुल जी भोजपुरी माटी के समग्र जीवन के रससिद्ध कवि बानी।उनका कविता में जीवन के विविध पक्ष समाहित बा। एकर प्रमाण बा नीचे के पँक्तियन के उकेरल गइल अनेक भाव-चित्र -

साँच बोलला पर
पहिले कट जात रहे जुबान
बाकिर,

आज त गरदने कटँ जाता ।

(साँच)

X X X

जिनगी
जमकल पानी अइसन
दुर्गंधित हो गइल बा
गति के अभाव में।

(बिखरल जिनगी)

X X X

देह के चुअल पसेना
सींच देला
धरती के सूखल छाती
आ लौटा ले आवेला
हरियाली के।

(मउअत के बुलावा)

ऊपर के पंक्तियन में जवन जिनगी के सच्चाई प्रकट भइल बा ओकरा से मुकुल जी के काव्य मानस के बखूबी समझल जा सकेला।

मुकुल जी के कविता में कुछ पौराणिक तथ्यन के समावेश सहज रूप में भइल बा । खास करके 'सूरज के बेटा' आ 'आँचर के टुकड़ा' में एह तरह के मिथक के प्रयोग भइल बा जेकरा में कवनो खास नयापन नइखे,बाकिर कवि के ओह कवितन के लिखे का पाछे जवन भी मंतव्य रहल बा ऊ स्पष्ट बा। एकरा अलावे कवि के ध्यान ऋतु वर्णन पर भी ज्यादा बा ।ऋतुअन के वर्णन के एगो प्राचीन काव्य परिपाटी रहल बा। ओही मेल में ओह तरह के कवितन आ गीतन के देखल जा सकेला।

बाकिर मुकुल जी के ऋतु वर्णन में थोड़ा नवीनता वा।इनका वर्णन में प्रकृति के साथ-साथ जिनगी के भी कवनो ना कवनो पक्ष सामने आ जाता। ओह तरह के वर्णन एह पंक्तियन में देखल जा सकेला -

डाढ़ी
मजबूर होके
हेमन्त से कहलस
मत करीह हमरा के नंगा
ना त लुटा जाई
हमार इज्जत ।

(मंगल गान)

ऊपर के पंक्तियन में हेमंत ऋतु के वर्णन अपारम्परिक ढंग से भइल बा। एही ढंग के प्रयोग जहाँ - तहाँ मुकुल जी के भोजपुरी गीतन में भी देखल जा सकेला । कुछ गीत -पंक्तियन के जायजा लिहल जाय।

1. छवले सगरो बदरी बा
तबहूँ प्यासल गगरी बा

(पृष्ट 43)

2. साफ आसमान हो गइल
फागुनी विहान हो गइल

(पृष्ट 44)

3. पतझर जब से पास भइल
नियरा तब मधुमास भइल ।

(पृष्ट 46)

आँचर के टुकड़ा में संकलित कुछ नीमन गीत पंक्तियन के देखल जाय जेकरा के कवि मन अक्सर गुनगुनवात रहेला।

1. जब-जब याद पड़े बीतल दिन
मन -मौसम तब नम हो जाय

(पृष्ठ 36)

2. हम गीत दर्द के गाइले

(पृष्ठ 37)

3. पंछी दूर ठिकाना बा

(पृष्ठ 5)

4. जा तानी हम गीत छोड़ के गाँव में

(पृष्ठ 11)

5. लाली लउकल आसमान में
फूटल किरिन विहान के

(पृष्ठ 17)

मुकुल जी के गीत गेय आ श्रृंगारिक भाव,आध्यात्मिक भावना आउर जिनगी के सच्चाई से भरल -पूरल बा । इहे वजह बा कि उनका गीत आ कवितन में जहाँ एक ओर निजी जिनगी के सुख-दुख आ वेदना के अभिव्यक्ति भइल बा दूसरा तरफ सामाजिक यथार्थ के भी दर्शन कइल जा सकेला । हालाँ कि कहीं - कहीं मुकुलजी पर कुछ कवितन के प्रभाव भी देखल जा सकेला,जहंवा सूरदास के प्रसिद्ध गीत 'निसि दिन बरसत नैन हमारे' आउर रामनरेश पाठक के चर्चित गीत 'महुआ के पीछे से झाँका है चाँद पिया' के तर्ज पर मुकुल जी आपन निसि दिन अँखिया नीर बहावे (पृष्ट 35) आ सावन में गूंज उठल कजरी के तान पिया आजा(पृष्ट 23) जइसन गीत भी जाने - अनजाने प्रभाव में लिखले बाड़े। बाकिर एह गीतन में उनकर आपन मौलिक भाव बोध प्रकट भइल बा ।

एह तरे देखल जाय त मुकुल जी एगो नीमन मौलिक रचनाकार

बाड़े, एह में कवनो शक नइखे। उनका आगे के काव्य संग्रह के भी इन्तजार बनल रही।

नया शीतल टोला,आरा
बिहार
23.05.2003

राम निहाल गुंजन

स्वस्तिकार्चन

रमाकान्त'मुकुल' हमार संघतिया,हमार भाई आ क्लास साथी,साहित्यिक अभिरुचि से बचपन से सम्पन्न,सुने आ सुनावे के लगन,भीतरे-भीतरे गुनगुनाये के, शब्द संचयन आ लालित्य के प्रति उनका के भीतरे-भीतरे उकसावत रहल त कबले रुकल रहीत भाव के धड़कन आखिर माई का बोली में आँचर के टुकड़ा बन के जन-जन का प्रति हृदय के उमगल उद्गार छपिये गइल। तबे नू मन के फोड़ा फूट गइल आ हिया घइलिया अचायास फूट पड़ल। कविता साचीं कलम पर दर्द बन भाषा में रूपायित हो गइल आ आँचर के टुकड़ा भोजपुरी भाषा के देह के श्रृंगार बन गइल। द्रौपदी के आँचर के टुकड़ा मनमोहन के अस ओहलस कि हार गइल दुशासन आ चीर हरण के सपना सपने रह गइल। एही से चुप्पी साध के मुकुल जी देह के हड्डी दान करे के सपना सँजोअत बानी कि कहियो त जन-मन के हड्डी धनुष बन के आतंकवाद के रथ के अवरोधक बनबे करी आ मानवता लहलहा उठी।

आ कबो त विहान के सपना साकार होई आ सींच दिही देह के चुअत पसेना धरती के सूखल छाती। कतना बड़ा विश्वास बा रमाकान्त जी के, जबले साँस चली तबले दूर अंधकार भगावत रहीहन आ मन के दीया जरावत रहीहें। उनका अन्तर के अनकहल पीर छलक पड़ल आ धरती के हिया जुड़ा गइल। 'स्वान्तः सुखाय इ रघुनाथ गाथा' बहुजन हिताय बन गइल।

बदरा के आसमानी सुन्दरता देख के करिया केश लहराये लागल,एकरे चितवन में बिजुरी नभ में जब चमकल जन-जन के मन चन्दन अस गमके लागल आ अस रस बरसल कि हर हिया अगिया बगिया बन गइल त संसारो नाँचे लागल आ वसन्त सगरो पसर के अँचरा के कुसुमी गंध बन गइल,वसंत पतझर के उदास डगर छोड़ चारो ओर छा

गइल। कवि गूँगा-बहिरा के गाँव के बस्ती में सब दीन दुखी तक जाके धरती पर सुख बरसावे के साध सँजोवत बाटे। आ साँस-साँस में मधुवन उतर जाई आ अंग-अंग चंदन हो जाई।

वसंती हवा छू के बुढ़उ रमाकान्त जी के जवान बना देलस, उ एह कठिन समय में सबका के चहकावे के अरमान राखत बाड़न।

दर्द आ सौन्दर्य्य के अभिन्न नाता ह। कबहूँ दिन त कबहूँ रात। आशा के दिन,निराशा के रात एकेगो चिराग के दूनू पक्ष ह। दुख-सुख मन के भाव ह।कब कवन जागी इ कवि हृदय से पूछीं। भाव के बत्ती जरा के अँधकार से लड़े के मनोबल कवि के भावना ह। इ दीआ बराबर जरो,सुने आ गुने वाला में अनवरत रस संचार करत रहो, इहे हमार 'मुकुल' भाई के प्रति उद्गार बा। जबले उहाँ का रहीं भाव संसार में डूब-डूब के मोती लुटावत रहीं,इहे हमार हिया के प्यास बा। निश्चित रूप से कवि के इ प्रथम रचना सभे के हिया के हिलोर बनी, इ हमार अटल आ अटूट विश्वास बा।शिवास्ते पन्थानः के मुकुल सगरो सुगन्ध बिखेरबे करी।

शुभकामना के साथे !

प्रभुनाथ नगर
छपरा(सारण)

ध्रुव नारायण सिंह
एम०ए०,एम०एड०

आपन बात

लिखल-पढ़ल सहज काम ना ह। ज्ञानोपार्जन एगो साधना ह।साथ ही, समय आ परिवेश के पकड़ के भीतर आ बाहर के संतुलन साधे के एगो प्रक्रिया ह।वरिष्ठ साहित्यकार स्व० प्रफुल्ल चन्द्र ओझा'मुक्त'के प्रेरणा से हम लिखे के सीखनी।हमरा रचना पर आपन प्रतिक्रिया देत ऊहाँ के कहले रहनी-'बबुआ हो ! लिखल त आसान ह,बाकिर लिखत-लिखत रुक गइल कठिन ह। कवि भा लेखक होखे के ई पहिलका शर्त्त ह,हमरा के अकसरहा कुरेदत रहेला।

कबो-कबो हम सोचिले कि ऊहाँ के अइसे काहे कहनी।का लेखक आ कवि के बहुत लिखल आ बहुत उपजाऊँ भइल अवगुण ह? अगर अइसन बात रहित त बड़ लेखक आ कवि लोग के विपुलता, वैविध्यता आ कार्य-कुशलता ओह लोग के पहचान ना बतावल रहित। बाकिर,प्रफुल्ल जी के चेतावनी महज एगो चेतावनी भर ना रहे बल्कि , शब्द-प्रवाह आ अति भावुकता से सावधान कइल रहे।सचहूँ सद्यः प्रसूत विचार भाव- संवेदना के जगह ना ले सके। एकरा खातिर मन पर अंकुश लगा के साधना के प्रति जागरुक होखे के चाहीं, तबे कविता भा कहानी में प्रवाह आ आत्मिक संवेदना प्रवाहित कइल जा सकेला। एही से साहित्य के ओर हमार आकर्षण भइल।

विद्यार्थिए जीवन से हम कुछ तुकबन्दी करत रहनी आ स्थानीय स्तर पर आयोजित गोष्ठियन में अपना उपस्थिति से कवि लोग के नाम के साथ आपनो नाम गिनवा लेत रहीं।स्थानीय 'ऋतज' (साहित्य- संस्कृति प्रगतिशील संस्था) जवना के संस्थापक श्री रघुनाथ शांति सत्यायन रहनी आ प्रत्येक सप्ताह साहेबगंज मन्दिर में गोष्ठी आयोजित होत रहे, के हमहूँ एगो सदस्य रहनी। ओह संस्था से मुख्य

रूप से जुड़ल जे कवि- साहित्यकार रहे ओह में कविवर कन्हैया, सतीश्वर सहाय वर्मा सतीश,केशव प्रसाद त्यागी, अर्जुन सिंह अशान्त,शकुन्तला श्रीवास्तव 'करुणा' (ई सब लोग अब स्वर्गवासी हो गइल बा) प्रभाशंकर मिश्र, करुणा निधान 'केशव' चन्द्रिका मिश्र 'द्विजेन्दु , प्रो० बच्चू पाण्डेय, ध्रुवनारायण सिंह, आदि लोग रहे। बाद में स्व० डॉ० विश्वरंजन आ डॉ० वीरेन्द्र नारायण पाण्डेय मुजफ्फरपुर से आइल लोग त उहीं लोग ओह संस्था से जुड़ गइल लोग।

धीरे - धीरे 'ऋतज' में निष्क्रियता आ गइल आ 'चर्चना' (साहित्य- संस्कृति- शिक्षा- पीठ) नाम के एगो दोसर संस्था स्व० डॉ० विश्वरंजन, स्व० सतीश्वर सहाय वर्मा ' सतीश', प्रो० बच्चू पाण्डेय आ डॉ० वीरेन्द्र नारायण पाण्डेय के सहयोग से स्थापित भइल। 'चर्चना' जवना के बिहार स्तर तक प्रसिद्धि दिलवावे में स्व० डॉ० विश्वरंजन आपन पूरा जीवन समर्पित कर देहले। हमहूँ भाई विश्वरंजन के अपार स्नेह पाके ' चर्चना' से जुड़ गइनी जहँवा हमरा कविता के एगो नया आयाम मिलल। बाकिर ज्यादा दिन तक हम 'चर्चना' से जुड़ल ना रह सकनी। कारण हमार नौकरी रहे। 'चर्चना' से जुड़ला के कुछे वर्ष बाद हमार बदली दोसरा जगह हो गइल आ नाहियो चाह के हमरा छपरा छोड़े के पड़ गइल ।

सरकारी नौकरी से अवकाश मिलला के बाद फेरु हम 1997 में छपरा जब अइनी त हिन्दी आ भोजपुरी के जानल- मानल गीतकार आ ' वातायन' (साहित्य, संस्कृति, शिक्षा- संस्थान) के संस्थापक भाई रिपुञ्जय निशान्त से हमार भेंट भइल त हम पवनी कि जवन स्नेह

डा० विश्वरंजन से हमरा मिलल रहे ऊहे सहयोग रिपुञ्जय जी से भी मिलल आ हम ' वातायन' से जुड़ गइनी ।

अइसे त, मुख्य रूप से हम हिन्दी में ही कविता आ कहानी लिखत रहनी बाकिर, भाई रिपुञ्जय जी के ई कहल कि भोजपुरी अपना माटी के बोली ह आ एकरा के समृद्ध भाषा के स्वरूप देबे खातिर भोजपुरी में भी लिखे के चाहीं, हमरा खातिर प्रेरणा स्रोत बन गइल आ हम भोजपुरी में लिखें के प्रयास धीरे- धीरे करे लगनी। परिणाम ई भइल कि एह भोजपुरी काव्य- संकलन के प्रकाशन सम्भव हो सकल । एतने ना, अपना कचहरी के व्यस्तता के बादो निशान्त जी एह पुस्तक के भूमिका लिखे खातिर भोजपुरी के जानल-मानल विद्वान श्री पाण्डेय कपिल से हमार परिचय करवले आ कपिल जी भूमिका लिखे के आपन स्वीकृति त देवे कइनी, लिखबो कइनी। हमरा पास शब्द नइखे कि हम पाण्डेय कपिल जी के कृतज्ञता ज्ञापित कर सकीं, साथ ही, हम भाई रिपुञ्जय जी के भी धन्यवाद देवे में अपना के समर्थ नइखीं पावत काहे कि अगर उनकर उत्प्रेरणा ना मिलल रहित त ई भोजपुरी काव्य-संकलन प्रकाशित होके पाठक लोग तक ना पहुँच पाइत।बाकिर , हमार ई आपन बात तब तक पूरा ना हो सके जब तक हम भाई दक्ष निरंजन शम्भु , सुनिल कुमार पाठक आ धर्मेन्द्र माधव के धन्यवाद नइखी दे देत,हम ओह लोग के धन्यवाद देत बानी।. काहे कि ई लोग हमरा के बराबर उत्साहित करत रहल बा। अंत में वरिष्ठ साहित्यकार आ आलोचक रामनिहाल गुंजन आ ध्रुव नारायण सिंह के आभार कवना शब्द में व्यक्त करीं जे 'आँचर के टुकड़ा'पर आपन समीक्षात्मक विचार लिखे के हमार आग्रह स्वीकार कइल

लोग,हम ओह लोग के आभारी बानी।

ई काव्य संकलन पाठक लोग तक परोसे में हमरा झिझक भी होता। बाकिर ना परोसल भी ठीक नइखे, काहे कि एकर मूल्यांकन त सुधी पाठक लोग आ प्रबुद्ध विद्वाने लोग नू करी। आशा बा कि राउर भरपूर प्यार आ सहयोग मिली जे दोसरका डेग बढ़ावे में हमार उत्साहवर्द्धक होई ।

पूर्वी दहियाँवा,
जगदम्बा रोड,छपरा

रमाकान्त पाठक

कविता- क्रम

मन फोड़ा अस फूट गइल /1
आँचर के टुकड़ा /2
साँच /4
पंछी दूर ठिकाना बा /5
मउअत के बुलावा /6
पत्ता /7
बरखा के रतिया /8
पारदर्शी जल /9
तबाही /10
साथी तोहरे गाँव में /11
ढिबरी के बाती /12
एगो फाटल पन्ना/13
मेघ उमड़े- घुमड़े घनघोर/14
भोर/15
ऊ ना होला आपन/16
छँटल अंधेरा प्रान के/17
अभी देरी बा/18
ऐनक/19
सखियाँ मिल गावे/20
सूरुज के बेटा/21
बिखरल जिनगी/22
पिया आजा/23
पिआस/24
मंगल-गान/25
देखि के नाचे जग संसार/26

गुड़ के बाट/27
महीना फ़ागुन के /28
अंकुर/29
सपना सजावे आ गइल बा/30
मत बहाव आँसू/31
समय कइसन आ गइल/32
मन काहे विकल भइल/33
अँखिया नीर बहावे/35
बीतल दिन/36
दर्द/37
जीवन–मधुवन/38
मन के धन/39
वंशीबट के छाँव तले/40
मेघ ना बरसल/41
सुख घरे–घरे बहुरल/42
तबहूँ प्यासल गगरी बा/43
साफ आसमान हो गइल/44
आँख तनी छलका के देखीं/45
पतझर जब से पास भइल/46
खूब शहर में गस्ती बा/47
दुख कइसे बिसराई हम/48

❀

मन फोड़ा अस फूट गइल

घइला फूटल
मन फोड़ा अस फूट गइल

झरल आँख से जीवन-मोती
ले सन्ताप घुटन के
खारा जल में तैरे लागल
टुटही नाव सपन के

अच्छा - बुरा समय आ
पीछे छूट गइल

सूख गइल धरती पर चू के
पर,ना प्यास बुताइल
मिल के बिछुड़ गइल सागर से
घटा रूप धर आइल

सूखल ओठ कण्ठ में
विष के घूँट गइल

आँचर के टुकड़ा

अनगिनित बेर
मन में
उठेला सवाल
कि बइठल - बइठल
जरूरे सोचत होइहें भीष्म
कि कइसे फँस गइले धर्मराज
शकुनी के पास में
घूम जाला
एगो के बाद एगो चित्र
आ ठहर जाला आँख
जा के द्रौपदी के
साड़ी का छोर पर
जवना के
पकड़ के खींचत रहे
बेरहमी से
दुशासन के हाथ
बइठावे खातिर
निर्वस्त्र द्रौपदी के
दुर्योधन के जाँघ पर
डूबल रहे
पूरा के पूरा हस्तिनापुर
स्वार्थ में
दुहाई देत

धर्म आ वचन के
झुक गइल रहे
पाण्डव दल के मूड़ी
सिया गइल रहे
सबकर ओठ
आ सभे
चुप्पी साध के
सुनत भर रहे
नंगा होत इतिहास के
चीख आ पुकार
अस्त भइल जात रहे
सभ्यता के आखिरी किरिन
तसहीं उठल
एगो कटल अँगुरी
जवना में
लिपटल रहे
आँचर के टुकड़ा
आ बच गइल रहे
भरत वंश के लाज

साँच

चुप्पी
अच्छा ह
एहिसे जीयत लोग
बोले के ना चाहे साँच
साँच बोलला पर
पहिले कट जात रहे जुबान
बाकिर आज त गरदने कट जाता
अइसन समय में
अब लाशे बोल सकेला साँच !
पैदा होते
चटावल जाला नमक
बनावल जाला नमकहलाल
झूठ बोले खातिर
फेरू केहू पैदा होई दधीचि-
जे चुप्पी साध के
गला दी आपन देह
कर दी हड्डी दान
जवना से
बनावल जाई धनुष
जे तन जाई
आतंकवाद के खिलाफ
आ बोले लागी
जीयत लोग साँच

पंछी दूर ठिकाना बा

पंछी दूर ठिकाना बा
कहिया ले ई रात अन्हरिया
बइठल हँसी उडाई
कब विहान के झिलमिल रेखा
सपना बन मुस्काई
कब ले धुन्ध छँटी जिन्नगी के
कहँवा भोर सुहाना बा

गाछी -गाछी घूम-घूम के
खोजे रैन बसेरा
का सुख-दुख के मिलन -विन्दु पर
ठमकल आज सबेरा ?
पर अरमान अधूरा ले के
गावत फिरत तराना बा

मन के प्यास बुझावे खातिर
ना सावन घन आवे
रटन पपीहा के सुन के,ना
स्वाती जल बरसावे
जीवन के उजड़ल बगिया के
आसे महज बहाना बा

मउअत के बुलावा

देह के चुअल पसेना
सींच देला
धरती के सूखल छाती
आ लौटा ले आवेला
हरियाली के
भर जाला
तरह-तरह के फूलन से
धरती के आँचर
फूल !
जे दे जाला
उदारता के सन्देश
लुटा के आपन सुगन्ध
हवा में
सुन्दरता के लोभी
तूड़ लेला डेहुँगी से
आ उफ तक ना करेला
ऊ फूल
चुपचाप पी जाला
अपना दर्द के
दानी कर्ण के लेखा
ई जानियो के
कि कवच-कुण्डल देहल
मउअत के बुलावा ह

पत्ता

हम हईं पेड़ के पत्ता
बाकिर हमरा के
तनिको कमजोर मत बुझीह
इहे नू
कि हमरा में कवनो दिल नइखे
राह के सम्बन्ध होला
राही से
आ नदी के
किनारा से
सुगन्ध फूल में होला
ना कि टहनी में
चहकत गौरइया
आ झरना के झर-झर में
गूँजेला गीत
त दे देला पत्ता
जरत राही के
भरल दुपहरिया में छाँह
जहाँ कुछ देर ठहर के
ऊ कर लेला आराम
आ पत्ता!
डोल-डोल के
हर लेला
राही के तन के ताप

बरखा के रतिया

सावनवा फुहिया चढ़ आवे
तन - मन में अगिया लहकावे
सूतल सपना ना अँखुआइल
सूखल ना डाढ़ हरियराइल
समा गइल कँपकँपी हिया में
गरज-गरज बदरा डरवावे
पिया - पिया पपिहा के बोली
लागे लागत जइसे गोली
लागेला सेजिया कटावन
बिजुरी के चमक मुँह बिरावे
नाच - नाच बुन्नी आँगन में
घोर गइल माहुर जीवन में
बरखा के रतिया भकसावन
आशा के नाव के डुबावे

पारदर्शी जल

अनगिनित काल से
संजोअल
साँच मन के प्रवृत्ति
तलाशत रहेला अवसर
मौन सधले
लोभ के भरमवलो पर
ऊ हमेशा जागत रहेला
सजग आँख से देखे के
करेला चेष्टा -
हर कुटिल भ्रमजाल के ;
काहे कि -
ओकरा हिया पर
अंकित रहेला
बीतल समय के पगधूर
जेकरा छुअला से
हो जाला-
पत्थरो जीवन्त
हम हमेशा से
तलाशत रहिले
सच्चाई के छन
हमार मन-
स्वीकारेला
गीत के बहत
पारदर्शी जल

तबाही

एक दिन
दुखी मन से
हवा से पुछनी
का भाई!
ओह पार
सुख से रहल ह नू ?
जबाब मिलल
जानत नइख
फइलेला रोग
जब छूत के
त तबाह कर देला
हमहूँ तबाहे रहनीं हँ
ओह पार
काहे कि-
ओहू पार
बढ़ा रहल बा आपन डेग
आतंकवाद !
आ पसर रहल बा
लूट,चोरी,अपहरण आ हत्या
के
साम्राज्य

साथी तोहरे गाँव में

जा तानी हम गीत छोड़ के गाँव में
साथी तोहरे गाँव में

मौन पड़ल बा जे सितार
ऊ सरगम से मिल बोली
तनहाई तूरे खातिर
चुप्पी के घूंघट खोली
नूपुर बन जीवन स्वर बाजी पाँव में
साथी तोहरे गाँव में

जब ना चैन मिली इचिको
तब रतिया लोरी गायी
लोर सूख जाई अँखियन के
सुन्दर स्वप्न रचाई
जीत बनी तब हारल बाजी,दाँव में
साथी तोहरे गाँव में

जब ले साँस चली तब ले
हम तोहरे गीतिया गायेब
दूर भगायेब अन्धकार के
मन के दीया जरायेब
भोर,साँझ,दिन,रात,धूप में-छाँव में
साथी तोहरे गाँव में

❀

ढिबरी के बाती

साँझ होते
पश्चिमी किनार पर
उतर गइल सूरज
मिटावे खातिर
आपन दिन भर के थकान
धरती दूनू हाथ उठा के
भर लेहलस
अपना गोदी में
आ समा गइल सूरज
धरती के आँचर में
चरवाही से लौटत
गइयन के खूर से
उड़त धूरा में
भुला गइल सूरज के जोत
दिन भर
एह पार से ओह पार
आवत-जात नाव
बन्हाये लागल किनार पर
आ मलाहिन के बिटिया
टूँगे लागल
ढिबरी के बाती

एगो फाटल पन्ना

जन्म जन्मान्तर के
साथ निभावे
कसम पर कसम खिआवे
आइल रहे मधुमास जीवन में
प्रकृति के पूरा चित्र लिहले
गाछ रहे पत्ता से भरल-पूरल
आ खिलल रहे हर डेहुँगी पर फूल
नदी में मारत रहे हिलोर
जवानी !
आ मन हो गइल रहे हिरना
मधुमास!
सदा खातिर लौट गइल जीवन से
ठूँठ हो गइल गाछ
सूख गइल जीवन के नदी
आ मन हो गइल स्थिर
ना रहल कवनो सपना
ना सपना साँच करे खातिर
कवनो उत्साह
आँख के विस्तार में
भुला गइल
जीवन के
एगो फाटल पन्ना

मेघ उमड़े-घुमड़े घनघोर

प्यासल धरती अकुला के
ताके अम्बर के ओर
मेघ उमड़े - घुमड़े घनघोर

मूर्च्छित धरती के मुँह पर
पानी के छींटा मारे
जब ले आँख खुले ना तब ले
बरस -बरस पुचकारे
पकड़ इन्द्रधनुषी आँचर के
उड़ा रहल बा छोर
मेघ उमड़े - घुमड़े घनघोर

अन्तर के अनकहल पीर
जागल आ जाग बुताइल
छलक पड़ल रस के गागर
धरती के हिय जुड़ाइल
ताप - शाप से मुक्ति मिल गइल
वन में नाचत मोर
मेघ उमड़े - घुमड़े घनघोर

भोर

आग बुत के
जसहीं भइल राख
तसहीं
आइल एगो तेज हवा के झोंका
आ उड़ा ले गइल
राख के
छितराइल मनहूसी
बेध गइल मन के
आ छा गइल
चारो ओर चुप्पी
उछलत - कूदत
छउकत - चहकत
आइल गदबेर
आ
डाहे मुँह फेर लेहलस
रात के आवत देख के
इ बाँझ नू ह
ना जाने का सोचेले
शायद,
कोसेले मने - मने रात के
जेकरा कोखी से
जनमेला भोर

❀

ऊ ना होला आपन

पराग
चुपके से
फूल से कहलस
भँवरा
जबले खुल के
ना कर लेला मनमाना
तबले
ना जाला छोड़ के
तू !
आपन हिया खोल के
हमरा के
कर देल समर्पित
ओकरा सामने
आ ऊ हमरा के
छीन लेला तोहरा से
चूस लेला
जीवन - रस
बाकिर,
एकरा बादो
ऊ ना होला आपन

छँटल अँधेरा प्रान के

लाली लउकल आसमान में
फूटल किरिन विहान के
तनले रहे रात जे चादर
गते-गते गुटियावे लागल
घूँघट कुछ - कुछ धरती अपना
मुँह पर से सरकावे लागल
जोगी फेरी लगा पराती
गावे जन कल्यान के
आइल जसहीं भोर पहिलका
कुछ अंजोर हो गइल उजागर
तसहीं गछियन से चिरइन के
छलके लागल गीत बराबर
गली - गली में शोर हो गइल
आइल दिन उत्थान के
जरत रहल विश्वास के दीपक
रातो - दिन मन के आँगन में
लागल खिले कली सुधियन के
जीवन के मउरल कानन में
जोत जगमगा उठल धरा पर
छँटल अँधेरा प्रान के

अभी देरी बा

समय के दौर में
धूमिल हो गइल बा छवि
लांछित हो गइल बा भंगिमा
हर दिशा में
गूँज रहल बा
रावणी अट्टहास
लछमन के
मुर्छाइल देह
गोदी में लिहले
बइठल बाड़े राम
आ निहारत बाड़े आसमान
बिछवले बाड़े आँख
हनुमान के राह में
बनवले बाड़े
भयातुर मुद्रा
बाकिर,
अभी देरी बा
बहुते देरी
आवे में
उद्धारक समय का

❀

ऐनक

ऐनक मे
उभरल प्रतिबिम्ब
देख के-
शर्मा जाला ऊ रूप
जेकर उभरेला
ऐनक में प्रतिबिम्ब
प्रतिबिम्ब !
जवन ना होला स्थायी
बदलत रहेला
आपन चेहरा
रूप के साथे
सुन्दरो रूप
कबो-कबो
लउके लागेला बदरूप
ऐनक में
आ भाग जाला ऊ लोग
डेरा के
ऐनक के सामने से
जे निहारत रहेला ऐनक में
आपन प्रतिबिम्ब
बाकिर,लोग कहेला
ऐनक,झूठ ना बोले

सखियाँ मिल गावे

सावन में बदरा घिर आवे
कजरी सखियाँ मिल गावे

थिरकन पर पाँव संग
बाज उठल पायलिया
नाच उठल गाँव-डगर
झूम उठल बँसवरिया
बिजुरी बर टिकुली चमकावे
कजरी सखियाँ मिल गावे

रस के बौछार करे
अँगना,दुअरा,राहे
तन-मन में गूँज उठल
गीत अनसुनल काहे
हरियर आँचरवा फहरावे
कजरी सखियाँ मिल गावे

सावनी फुहार पड़े
मोती छितरा जाला
बरसाती हवा अंग
छू के सिहरा जाला
केकरा ना मने - मने भावे
कजरी सखियाँ मिल गावे

सूरुज के बेटा

हम हई
सूरुज के बेटा कर्ण
हमार माई
तेजस्विता के पाप समझ के
त्याग दिहली
हमरा साथे हमरा बाप के
आ बना लिहली
अंकशायी
एगो रोगी के
जे पीड़ित रहे पाण्डु रोग से
बाकिर,
हमरा कवनो शिकायत नइखे
अपना माई से
शिकायत त हमरा ओकरा से बा
जे बान्ह देहलस
एगो बीमार खूँटा से माई के
आ माई का
ओह खूँटा के वंश चलावे खातिर
ढोये के पड़ल
ओह परम्परा के
जवना के इन्कार कर के
त्याग दिहले रहली हमरा के

बिखरल जिनगी

जिनगी
जमकल पानी जइसन
दुर्गन्धित हो गइल बा
गति के अभाव में
आ रह गइल बा घेरा के
जिनगी के सुगन्ध
फुलवारी में
हवा के साथ
घुल - मिल के
उड़े के आकाश में
रोजे देखेला सपना
बाकिर,
आँख खुलते
बुझाला कि जिनगी
बिखर गइल बा
सपना जस
टूट के

❀

पिया आजा

सावन में गूँज उठल
कजरी के तान
पिया आजा

झिहिर-झिहिर झिहरेला झूम के फुहार
चँवरा में आइल बा अजबे बहार
गा- गा के धनिया अब
रोपेले धान
पिया आज़ा

चाँदी जस चमकेला पानी के धार
जल-तरंग बाजेला नदी के कछार
बदरी से लुका -छिपी
खेलेला चान
पिया आजा

गेंदा जस फुलाइल कदमिया के डाढ़
रहिया निहारे बिरहिया हो खाढ़
लोर बनि टपकेला
आँख से परान
पिया आजा

❀

पिआस

धरती
आसमान से कहलस
तूं जे अन्हरिया में
रोजे बहावेल लोर
आ ना निकालेल
मुँह से एको शब्द
ऊ भोर होते
टुकड़ा - टुकड़ा होके
टँगा जाला
फुनगी - फुनगी पर
मोती जइसन
लोग कहेला
कि तू बहावेल लोर
बुतावे खातिर हमार
पिआस
बाकिर,
हम रह जाइले
पिआसले

मंगल-गान

डाढ़ी
मजबूर होके
हेमन्त से कहलस
मत करीह हमरा के नंगा
ना त
लुटा जाई-
हमार इज्जत
आ लज्जित हो जाई
तोहरा लाड़ला वसन्त के
किसलय दुकूल
हो जइब तू बदनाम
फेर
केकरा से देखइब आपन मुँह
के कही तोहरा के
वसन्त के जन्म-दाता?
जेकरा जनमते
होखे लागेला आनन्द के वर्षा
करे लागेले
धरती सिंगार
आ सुनाये लागेला
मंगल - गान

देखि के नाचे जग-संसार

बदरी बाला आसमान में
रचि - रचि करे सिंगार
देखि के नाचे जग - संसार
करिया केश हवा में लहरे
मन में खुशी समाला
पूजा - थाल सजे घर - घर में
बरखा गीत गवाला
कजरी गावत चले झूम के
सखियन के जब हार
देखि के नाचे जग - संसार
एकरे चितवन ले बिजुरी
नभ में चमके दमकेला
एकरे छुअते देह दुखी मन
चन्दन अस गमकेला
शान्त सरोवर के हियरा में
उठे ज्वार पर ज्वार
देखि के नाचे जग -संसार
इहे जगत के जीवन देला
सींच - सींच के जल से
इ जब ले बरसे ना तब ले
उठे आग भूतल से
इहे दिवावे त्राण ताप से
करि - करि रस - संचार
देखि के नाचे जग - संसार

गुड़ के बाट

गुड़ देखा के
पत्थर मारल
नीमन ना ह
आ
पत्थर मार के
गुड़ देहल
नृशंसता ह
कबो - कबो
लालच में पड़ के
हम स्वीकार कर ली ले
इ नृशंसता
बहुते खा चुकनी
पत्थर के मार
बाकिर,
अब त
जोहतानी
गुड़ के बाट

महीना फागुन के

सतरंगी चुनरी रंगवा के
तितली करे सिंगार
महीना फागुन के
चढ़ते रंग वसन्ती,लाली
दउड़ गइल जीवन में
आ मिठास भर गइल गीत के
कोयल के कुहुकन में
अब त लाजे लजा के भागल
धरती से पतझार
महीना फागुन के
कुसुमी गंध उड़े अँचरा से
मात गइल अमराई
पत्ता - पत्ता के थिरकन पर
थिरक उठल पुरबाई
भुँइया में महुआ के गगरी
छलकावे भिनुसार
महीना फागुन के
मधुवन में कान्हा के वंशी
बाजल यमुना तीरे
सुन के मुस्काये कलियन में
राधा धीरे-धीरे
मस्ती में गुनगुना रहल बा
भँवरा पाँख पसार
महीना फागुन के

❀

अंकुर

अंकुर !
फूट के
हो जाला घास आ गाछ
घास हरियर हो के
करेला आशा के संचार
आ गाछ
आपन डाढ़-पात फइला के
बता देला विकास के डगर
त लोग कहेला कि आ गइल वसन्त
सुन्दरता आ जीवन्तता के प्रतीक
सूरुज !
उजाला,हर्ष ,उन्नति आ विश्वास के
पर्याय बन के
जइसे सहायक होला
बीज के अंकुरावे में
ठीक ओही तरे
आदमी के भीतर
फूटेला
आशा आ विश्वास के अंकुर
आ आदमी
पतझर के उदास डगर
पार करके पहुँच जाला
वसन्त के गाँव में

❀

सपना सजावे आ गइल बा

गीत के लेके सहारा,गुनगुनाये आ गइल बा
साँस निर्झर के निकल,संगीत बन लहरा गइल बा

प्रेम में पागल पतंगा
जब नियंत्रण रख सकल ना
मन त मन ह तन दीया के
जोत से कुम्हिला सकल ना

तूरिये देला छने में,लाज के बन्धन झटक के
चोट जब लागल हिया पर,तब अधर मुस्का गइल बा

ना तुमी आवे शिला में
हो भले बरसात कतनो
ना मिटे पावे अँधेरा
उगे जोन्ही पाँत कतनो

रात भर चुपचाप जरते,रह गइल दीपक अकेला
बन्द अँखियन के उजाला,देख मन घबड़ा गइल बा

आँख के सपना उड़ल ना
मीत के ना साथ छूटल
नाम पर अमृत के,विष जब
पी गइल, ना आह फूटल

प्रान साँसन में अँटक के,रह गइल ना निकल पावल
नींद उचटल जान के,सपना सजावे आ गइल बा

मत बहाव आँसू

विदाई के समय मत बहाव आँसू
मत देख ममतामयी आँख से
हमरा के रोक ना पाई
तोहरा ममतामयी आँख के आँसू
त व्यर्थ बा तोहार आँसू बहावल
हमरा से कवनो भूल हो गइल होखे
त माफ करीह
हम जा रहल बानी उहँवा
जहँवा खून से लाल हो गइल बा
तोहार छाती
आ छा गइल बा सन्नाटा
हम जा रहल बानी-
ओकरा के मटियामेट करे
जे फइला के आतंक
लाल कर देले बा तोहार छाती
हम आयेब,जरूर आयेब
बाकिर अपना गोड़े ना
अपना साथियन के कन्धा पर
हमरा पीठ पर लागल घाव देखते
थूक दीह हमरा देह पर
आ कोसिह अपना कोख के
बाकिर,छलनी भइल हमार छाती देखते
खुशी से आघा जइह

समय कइसन आ गइल

नाश के बदरी गगन में छा गइल
समय कइसन आ गइल

घुट रहल अब आदमी के साँस बा
साँच पर ना हो रहल विश्वास बा

भार धरती के सभे बाटे बनल
झूठ के परचम इहाँ लहरा गइल

हो रहल बा जीत इहँवा पाप के
ठग रहल बा लोग अपना आप के

ओठ पर अमृत ,जहर मन में भरल
रीत जग के लाज लख शरमा गइल

दिन भइल दुश्मन कि काटत रात बा
बात में हर घात आ प्रतिघात बा

हो गइल बीमार जब रितुराज तक
काग ना, कोयल कुबोल सुना गइल

❀

मन काहे विकल भइल

जब से टूट गइल सुख के सुन्दर सपना
सोच-सोच के तब काहे मन विकल भइल

आसमान में धीरे से उग के चन्दा
जड़ आ चेतन के हँस-हँस भरमावेला
विहँसेला जब फूल वसन्ती बेला में
झूम-झूम मस्ती में उपवन गावेला
जइसे पतझर चुपके से बगिया में आ
सूना कर जाला हर बाग-बगइचा के
तसही करवट बदलेला जब समय कबो
चल के चाँद सुबह तक जान गँवावेला
रूठ गइल जब फूलन से मधुमास मधुर
तब काहे मन सोच-सोच के विकल भइल

गूँज रहल संगीत जवन मीठा -मीठा
बन के प्रीत उहे उतरेला जीवन में
सुन के कान्हा के वंशी के तान मधुर
राधा जइसे दउड़त पहुँचे मधुवन में
बाकिर समझे के बा समय कहाँ केकरा
जे सुध-बुध सब गँवा प्रेम में लुट जाई
उतरल ना अब तक जइसे जमुना जल से
घोरा गइल जे श्याम रंग बा तन-मन में

जब सूखल गछिया कदम्ब के ना पनकल
तब काहे मन सोच-सोच के विकल भइल

जब उलझन के बा मन में ताना-बाना
लागल जब ले रही इहाँ आना-जाना
जब संघर्ष सारथी बन के समय-रथी
बन जाला तब हार,जीत के पैमाना
द्वैत अरु अद्वैत के खींचा-तानी में
केहू भेद सकल ना दुख के चक्रव्यूह
छोड़ रहल बा तीर जयद्रथ संहारी
करे धनुष टंकार पार्थ के मनमाना

बाकिर जब अर्जुन के चिता सजल साँझे
तब काहे मन सोच -सोच के विकल भइल

अँखिया नीर बहावे

निसि-दिन अँखिया नीर बहावे

आके याद जरावे तन के
कुशल-क्षेम पूछे निर्धन के
साँझ बाँझ-बेवा बन उतरे
लिखे कहानी रोज सपन के
पढ़-पढ़ मन के पीर बढ़ावे

बढ़ल विकलता चरम-विन्दु तक
तब साँसन के दीप बर गइल
समिधा के वेदी पर बइठल
यक्ष प्रश्न के होम कर गइल
लपट बढ़े आ तीर चलावे

बीतल दिन

जब-जब याद पड़े बीतल दिन
मन-मौसम तब नम हो जाला

बड़ा जलन होला अँखियन में
सुलगे लागेला मन-उपवन
धधक उठेला दसो-दिशा आ
लहके लागेला वृन्दावन

जब-जब खुले याद के गठरी
नया,पुराना गम हो जाला

दुबिया के हरियर फुनगी पर
अँटकल ओस बूँद से मिल के
किरण सूर्य के करे शरारत
घटा ओट से निकल-निकल के

देख ठिठोली घटा-किरण के
दर्द हिया के कम हो जाला

पगडण्डी पर पाँव बढ़ा के
थथम-थथम के धीरे-धीरे
लागल चले पवन पछुआ के
प्रबल वेग से होत फजीरे

नाचत गिरे पात शीशम के
तब सरगम के सम हो जाला

दर्द

हम गीत दर्द के गाइले
ई दर्द हवे कदकाठी के
ई ह हमरा परिपाटी के
ई हवे समय के लाठी के
ई दर्द ह हमरा माटी के
हम ओही दर्द के वीणा पर
जीवन के राग बजाइले

ई दर्द मिले त तर जाई
ई दर्द हवे हमरे थाती
एह दर्द से बिछुड़े का भय से
हम बाँधी ले एकर गाँती
सब दिन हम त एकरे खातिर
आँसू के अर्घ्य चढ़ाइले

गूंगा-बहिरा के बस्ती में
हम दर्द-दर्द चिल्लाइले
हम दर्द खरीदे का खातिर
हर दीन-दुखी तक जाइले
दुख दूर करे खातिर सभकर
सुख धरती पर बरसाइले

जीवन -मधुवन

हमरा साँसन में अब उतर गइल मधुवन
अंग-अंग हो गइल आज,जइसे चन्दन

उतर गइल ऊषा बन के दिन के दरपन
रंगा गइल तब इन्द्रधनुष में हर चितवन
बाग-बगइया चहकल,चहकल जग-मधुवन
अंग-अंग हो गइल आज,जइसे चन्दन

मदमातल अँखियन के भर के मधु-कलश
छलका गइल हिया में अचके तनी हुलस
पी के हरित भइल सूखल मन के मधुवन
अंग-अंग हो गइल आज,जइसे चन्दन

चटक गइल जूही-चम्पा के कली-कली
गमक उठल अन्तर्मन के हर गली-गली
तब सुगन्ध से भरल आज जीवन-मधुवन
अंग-अंग हो गइल आज,जइसे चन्दन

मन के धन

हम गरीब तन के हमरा बा मन के धन

हम आँधी तूफान सहीले
जग से नफरत दूर करीले
हम जन-जन के रक्षा खातिर
शंकर बन विष पान करीले
हम सुभाव से सरल,हई शीतल चन्दन

दया-दृष्टि हम सब पर रखनी
आपन कुछ परवाह ना कइनी
खींच-खींच हम लक्ष्मण - रेखा
हर क्षण के हम लेखा रखनी
हम अभाव में जी के हरदम रहीं मगन

हम जुग-जुग से अवघड़दानी
बा हमरो कुछ अजब कहानी
बचपन बीत गइल खेलत में
मस्ती में कट गइल जवानी
दुख कइसन?जब भइल बुढ़ापा के दर्शन

वंशीबट के छाँव तले

चल रे चल मन वंशीबट के छाँव तले
गीतन के राधा जोहत बा बाट जहाँ

ब्रह्म-ज्ञान उधो के अन्तर्ध्यान भइल
जब सिर चढ़ के प्रेम गोपियन के बोलल
डूबे लागल-अश्रुधार में वृंदावन
जब वियोग के रथ निर्मम होके दउड़ल

अबहीं ले गूंजत बाटे मुरली के धुन
बा कदम्ब आ बा जमुना के घाट जहाँ

गइयन के टोली सुन-सुन के टेर मधुर
दौड़ चले खोजत गलियन में,कुंजन में
बा वियोग में जरत आज तक ऊ मधुवन
जहाँ रचावे रास कन्हैया गोपिन में

रहे गुँथाइल सभे प्रेम के धागा में
फूलन के संग-संग करील के काँट जहाँ

मेघ ना बरसल

बइठल बा टकटकी लगा के लोग
कि अबले मेघ ना बरसल

सोन्ह-सोन्ह आइल ना
अबहीं ले माटी से गन्ध
कबले खेत जुताई,लागल
कब ले रही प्रतिबन्ध
सहे इन्द्र के कोप कहाँ ले लोग
कि अबले मेघ ना बरसल

ताल,तलैया,नदी,पोखरा
सगरो हाहाकार
आसमान से मांग रहल
धरती पहिला बौछार
पानी-पानी रटे रात-दिन लोग
कि अबले मेघ ना बरसल

भरी गोद ना सूखल धरती के
अब चिन्ता लागल
हँसी उड़ावे नभ गंगा आ
रतियो लागे पागल
गर्मी से उबियाइल सारा लोग
कि अबले मेध ना बरसल

सुख घरे-घरे बहुरल

मन मधुवन
तन चन्दन अस गमकल
रंग इंगुरिया पसरल चारो ओर
फटल कुहा के चादर कोरे-कोर
ओढ़ के सतरंगी चुनरी नभ से
उतर गइल धरती पर सुन्दर भोर
धूप खिलल
दिन के सूरज निखरल
अमराई में कोयल कूक उठल
मदमातल वासन्ती हवा चलल
पिया-पिया पपिहा लागल बोले
बन्द ओठ कलियन के तनी खुलल
मादकता
कोना-कोना पसरल
फूल खिलल भँवरन के दल पहुँचल
तितली के टोली घर से निकलल
खेतन में खनके लागल चूड़ी
ले हाथन में हँसिया गाँव चलल
दुख बीतल
सुख घरे-घरे बहुरल

तबहूँ प्यासल गगरी बा

छवले सगरो बदरी बा
तबहूँ प्यासल गगरी बा

हमदर्दी केकरा खातिर
दुश्मन सँउसे नगरी बा

फूल भला लोढ़ीं कइसे
काँटे डगरी - डगरी बा

बात हो गइल बा अइसन
हर सूरत अब कगरी बा

उलझीं हम केकरा बूते
सगरी दुनिया लबरी बा

❀

साफ आसमान हो गइल

साफ आसमान हो गइल
फागुनी विहान हो गइल

पपिहा के पिहकारी सुन
कोयल के आन हो गइल

पुरुआ से मातल मन के
पछुआ अब जान हो गइल

पतझर से जब भइल मिलन
बगिया वीरान हो गइल

वासन्ती हवा जब छुए
बुढ़वो जवान हो गइल

आँख तनी छलका के देखीं

दिल के अब धड़का के देखीं
आँख तनी छलका के देखीं

ज्ञान-धर्म के बात छोड़ अब
मन के मत बहका के देखीं

जर के राख होइये जाई
नफरत के लहका के देखीं

हम्रा जइसन होखे खातिर
मन आपन महका के देखीं

कब ले चहकत रहब अकेला
सबका के चहका के देखीं

पतझर जब से पास भइल

पतझर जब से पास भइल
नियरा तब मधुमास भइल

झूठ बात सुनते - सुनते
साँचे कहाँ उदास भइल

लोर बहे जब अँखियन से
दुख के कुछ आभास भइल

बइठल बाट निहारत में
बिछुड़न के अहसास भइल

लउकल जब से राह नया
जिनगी के तब आस भइल

खूब शहर में गस्ती बा

खूब शहर में गस्ती बा
इहाँ लुटाइल बस्ती बा

नून, तेल, लकड़ी महँगा
आइल खून के सस्ती बा

भूख-प्यास बा एक तरफ
दोसरा ओरी मस्ती बा

चिउँटी के मत बूझीं छोट
ओकरो आपन हस्ती बा

कइसे हम अब उतरब पार
टूट गइल जब कस्ती बा

दुख कइसे बिसराई हम

दुख कइसे बिसराई हम
भाग के कहँवा जाई हम

बात ना केहू बूझत बा
केकरा के समुझाई हम

कहीं ना मिल पावल आदर
केकरा के बतलाई हम

पत्थर दिल ना पसीजत बा
केतनो लोर बहाई हम

जीयलो आज भइल मुश्किल
मौत से का टकराई हम ?